A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

ठुमरी और उसकी समवर्गीय गायन शैलियों के सौंदर्य तत्त्व

Dr. Deepti Bansal
Associate Professor, Department of Music, Daulat Ram College, University of Delhi, Delhi

OPEN ACCESS CC BY

सार

सौंदर्य संगीत का प्राण है। सौंदर्य शास्त्र किसी भी कला के संवेदनात्मक, भावनात्मक गुणधर्म और मूल्यों का अध्ययन है। संगीत कला सौन्दर्य की अभिव्यक्ति का एक अभूतपूर्व माध्यम है। उपशास्त्रीय संगीत के अन्तर्गत आने वाली ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती, होरी आदि विधाऐं भावप्रधान और संवेदनशील हैं जो समझदार श्रोताओं के साथ-साथ साधारण श्रोताओं को भी आकर्षित कर आनन्द देती हैं। मानव की भावनात्मक संतुष्टि का नाम ही सौंदर्य है। ठुमरी और उसकी समवर्गीय गायन शैलियों के सौंदर्य-तत्त्व स्वर, लय,ताल, बंदिश, राग, रस, भाव, साहित्य अलंकरण इत्यादि है। नाद के सूक्ष्म तत्त्वों में ठुमरी और उस शैली की अन्य विधाओं का सौन्दर्य निहित है। सुगठित, नियोजित और माधुर्य-पूर्ण बंदिशें गीत शैलियों के सौंदर्य को बढ़ाती हैं। रंजक व उपयुक्त रागों में गीत-विधा का सौंदर्य निखरता है। लय, रस-भाव, साहित्य और अलंकरण इन सभी का समन्वय सौंदर्यवर्धन में सहायक है। सौंदर्य तत्त्वों को कायम रख कर जब हम किसी भी गीत विधा को प्रस्तुत करते हैं तो वह कलाकार तथा श्रोता दोनों को ही आनन्द की अनुभूति देता है।

मुख्य शब्द: *सौंदर्य, समवर्गीय, ठुमरी, कैशिकी, नाद, श्रृंगार, अलंकरण, राग*

भूमिका

भारतीय शास्त्रीय संगीत में सौंदर्य शास्त्र का विशेष महत्व है। सौंदर्य शास्त्र किसी भी कला के संवेदनात्मक, भावनात्मक गुणधर्म और मूल्यों का अध्ययन है। सुप्रसिद्ध कवि मैथिलीशरण गुप्त के अनुसार अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही कला है। मनुष्य सौंदर्य उपासक प्राणी है। प्रकृति के कण-कण में सौंदर्य बिखरा पड़ा है और उसके सम्पर्क में आकर मनुष्य इस सौंदर्य का आनन्द लेता है। जैसे ही वह इस सौंदर्य के प्रति जागरूक होता है वैसे ही कला का जन्म हेता है। सभी ललित कलाऐं जैसे - संगीत, काव्य, मूर्तिकला, चित्रकला इत्यादि सौंदर्य की अभिव्यक्ति का एक अभूतपूर्व माध्यम हैं। सौंदर्य का यह प्रकटीकरण जब स्वर, शब्द व ताल के माध्यम से होता है तो संगीत का जन्म होता है। संगीत कला हमें आनन्द की अनुभूति देती है और इस अनुभूति के पीछे निहित है उसका सौंदर्य-तत्त्व। ठुमरी और उसकी समवर्गीय गायन शैलियाँ उपशास्त्रीय संगीत की श्रेणी में आती हैं। ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती, होरी, बारहमासा इत्यादि विधाऐं भाव-प्रधान और संवेदनशील हैं जो समझदार श्रोताओं के साथ-साथ साधारण श्रोताओं को भी आकर्षित कर आनन्द देती हैं। नाट्य शास्त्र में चार वृत्तियाँ बताई गई हैं - भारती, सात्वती, आर्भटी और कैशिकी। एक श्रृंगारपूर्ण ललित गीत होने के कारण ठुमरी को कैशिकी वृत्ति यानि कि रूमानी शैली की गायन विधा माना गया है। मानव की भावनात्मक संतुष्टि का नाम ही सौंदर्य है। ठुमरी गायन शैली इस परिभाषा पर खरी उतरती है। ठुमरी और इस शैली की विधाओं में सौंदर्य के कौन-कौन से तत्त्व हैं, इस पर यहाँ सोदाहरण अवलोकन किया जाएगा।

नाद सौंदर्य या स्वर सौंदर्य

संगीत में सौंदर्य का प्रथम आधार स्वर है। स्वरों के विन्यास से संगीत में 'रूप' का उदय हेता है। यह रूप 'श्रव्य' है और इसकी अभिव्यक्ति मानव मन को प्रफुल्लित कर देती है। महर्षियों ने नाद-सौंदर्य से उत्पन्न रस-तत्त्व पर विचार कर के आनंद देने वाले नियमों की स्थापना की है।[i] ये नियम बंधन मुक्त हैं अर्थात् ये संगीत के रचयिताओं को ये अधिकार देते हैं कि वे लोक रूचि के अनुसार संगीत कला को परिवर्तित और परिष्कृत करें।

ठुमरी विधा को विभिन्न स्वरों द्वारा बोल-बनाव करके सजाया जाता है। बोल बनाव ठुमरी का प्राण है। जिस प्रकार एक गुलदस्ते को हम भांति-भांति के पुष्पों से सजाते हैं उसी प्रकार हम ठुमरी की बंदिश में निहित भावों को भिन्न-भिन्न स्वरावलियों द्वारा बोल-बनाव कर अभिव्यक्त करते हैं और उसके सौंदर्य-तत्त्व को उभार देते हैं। डॉ. प्रभा अत्रे के शब्दों में 'ठुमरी' को गढ़ा लोकसंगीत ने किंतु उसे रूपायित किया कला-संगीत ने।[ii] नाद के सूक्ष्म तत्त्वों में ठुमरी और उसकी समवर्गीय गान विधाओं का सौन्दर्य निहित है।

बंदिश का सौंदर्य

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में सभी गायन शैलियों की अभिव्यक्ति 'बंदिश' के माध्यम से होती है। बंदिश यानि बाँधने की क्रिया या भाव। संगीत में हम गीत की स्वरबद्ध रचना को बंदिश कह सकते हैं। ठुमरी, दादरा, कजरी आदि उपशास्त्रीय संगीत की गीत विधाओं की अनेकों बंदिशें उपलब्ध हैं।

बंदिश जितनी सुगठित, नियोजित और स्वर-माधुर्य से युक्त होगी वह उतनी ही प्रभावशाली होगी। उदाहरण स्वरूप पं. बड़े रामदास जी द्वारा रचित राग देस में एक बंदिशी ठुमरी है जो तीनताल में है। इसकी बंदिश के शब्द तीनताल की लय में सुघड़ता से गुंथे हुए हैं जिससे इसका सौंदर्य प्रस्तुतिकरण के समय निखर कर आता है।

राग देस - बंदिशी ठुमरी

स्थायी -

बादर रे, अरज गरज बरसन लागे

बिजुरी चमक जिया डराए

अंतरा -

ऐसे समय पिया छाए विदेसवा

जाओ कोउ लाओ पिया मनाए[iii]

सुगठित बंदिश का एक और उदाहरण है राग खमाज की ये बंदिशी ठुमरी।

स्थायी -

झमके बूंद बरसे

मैका पिया बिन, कछु न सुहावे

घरि पल छिन जिया तरसे हरसे

अंतरा -

निसु अंधियारी कारी बिजुरिया चमके

रसिक श्याम आए अनत घर से[iv]

अद्धा ताल में निबद्ध ठुमरी की इस बंदिश में लय में गुंथा बोल-बनाव और तानों व बोल तानों की सजावट चार-चाँद लगा देती है।

राग-सौंदर्य

राग का सामान्य अर्थ है आसक्ति या प्रेम। स्वरों का वह समूह जिनसे सौंदर्य की अनुभूति हो वह राग है। राग में रंजकता उत्पन्न करने की शक्ति निहित है। हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रागों का सागर अथाह है। ठुमरी और उसकी समवर्गीय गायन शैलियों में अधिकांश रूप से चंचल प्रकृति के रागों का प्रयोग किया जाता है जैसे - खमाज, काफी, पीलू, तिलककामोद, सिंदूरा, बरवा इत्यादि। किंतु हम देखते हैं कि शास्त्रीय गीत शैलियों में प्रयुक्त होने वाले रागों का भी ठुमरी, दादरा आदि में प्रयोग किया जाता है जैसे - बिहाग, शहाना, यमन, सोहनी आदि। यूँ तो होरी गायन शैली की बंदिशें अक्सर काफ़ी और खमाज राग में मिलती हैं पर राग शहाना पर आधारित प्रस्तुत होरी की छटा ही कुछ अलग है। दीपचंदी ताल में बद्ध ये बंदिश अनूठी है।

होरी - राग शहाना

होरी मैं खेलूँगी श्याम से डट के

जो श्याम मोसे करे बरजोरी

गारी मैं दूंगी जी घूंघटा पलट के[v]

इसी प्रकार राग बिहाग में एक ठुमरी है -

'हमसे नजरिया काहे फेरी बालम रे'[vi]

ठुमरी के प्रस्तुतिकरण में राग मिश्रण की भी छूट होती है। राग बिहाग की इस ठुमरी को अनेक कलाकारों ने प्रस्तुत किया है जैसे - शोभा गुर्टू, गिरिजा देवी, सविता देवी इत्यादि। उनके प्रस्तुतिकरण में बिहाग के अतिरिक्त विभिन्न रागों की छटा भी इस ठुमरी में देखने को मिलती है। इसी प्रकार दादरा गायन में भी मुख्य राग से साम्य रखने वाले रागों का प्रयोग किया जाता है। इसीलिए कलाकार प्रस्तुतिकरण के समय गीत विधा में प्रयुक्त रागों का परिचय मिश्र पीलू, मिश्र गारा आदि के नाम से देते हैं। लोक-संगीत से उत्पन्न होने के कारण कुछ कजरी, चैती, होरी गीतों में लोकधुनों का प्रभाव दिखाई देता है। विशुद्ध चैती मात्र लोकधुन है किंतु स्वर-संयोजन को देखते हुए लगता है कि चैती गीत अधिकतर खमाज थाट में रखे जा सकते हैं।[vii] होली की पारंपरिक धुन राग काफी के अंतर्गत आती है। ऐसी बहुत-सी होरियाँ हमें मिलती हैं जैसे -

'या बृज में हरि होरी मचाई'

या

'कैसी होरी मचाई कन्हाई'

या

'अबके फाग रचाऊँ लला मैं'

कजरी गीतों की धुनें भी अक्सर खमाज व देस राग से साम्य रखती हैं। कालान्तर में जब शास्त्रीय गायकों ने इसे अपनाया और परिष्कृत किया तो इस गायन शैली में पीलू, काफी, सारंग आदि रागों का भी प्रयोग दिखाई देने लगा।

ताल तथा लय का सौंदर्य

संगीत में काल प्रवाह की अभिव्यक्ति लय द्वारा होती है। लय मुख्य रूपसे तीन प्रकार की होती है - विलंबित, मध्य लय और द्रुत लय। बंदिश की आवश्यकता के अनुसार हम लय की गति को अति विलंबित और अति द्रुत भी कर सकते हैं। ठुमरी-दादरा आदि गीत विधाओं को अधिकतर दीपचंदी, जत, अद्धा, तीनताल, चाँचर, दादरा, कहरवा, रूपक इत्यादि तालों में गाया जाता है। बंदिशी ठुमरियाँ तीनताल और अद्धा ताल में पाई जाती हैं। बंदिशी ठुमरियों का प्रयोग आरंभ में कत्थक नृत्य के साथ किया जाता था। बनारस की ओर गाई जाने वाली बोल-बनाव की ठुमरियों में सोलह मात्रा की जत और चौदह मात्रा की दीपचंदी ताल का प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। ठहरी हुई लय में बोल-बनाव करने की गुंजाईश अधिक होती है। सिद्धेश्वरी देवी, गिरिजा देवी, शोभा गुर्टू, सविता देवी आदि की गायन-शैली इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है। पंजाब-अंग की ठुमरियाँ कहरवा, पंजाबी त्रिताल अद्धा में गाई जाती हैं इसके प्रवर्तक उस्ताद बड़े गुलाम अली खाँ और उस्ताद बरकत अली खाँ रहे। बड़े गुलाम अली खाँ साहब ने प्रसिद्ध ठुमरी 'का करूँ सजनी आए ना बालम' को कहरवा ताल में अत्यन्त खूबसूरती से प्रस्तुत किया है।

दादरा गीतों की बात करें तो दादरे अधिकतर चपल और उठी हुई लय में गाए जाते हैं चाहे वे दादरा ताल में हों अथवा कहरवा में। इनमें ताल के साथ लोच-लचक और नोक-झोंक की प्रधानता रहती है। उदाहरणस्वरूप बनारसी दादरा - 'डगर बिच कैसे चलूँ, मग रोके कन्हैया बेपीर'[viii] द्रुत दादरा ताल में प्रस्तुत किया गया है। पंडित महादेव प्रसाद मिश्र द्वारा प्रस्तुत इस दादरे का सौंदर्य द्रुत लय में गुंथे बोल-बनाव से उजागर होता है। राग खमाज का माधुर्य, दादरा ताल की चपल लय और कलाकार की परिष्कृत अदायगी से प्रस्तुत दादरे का सौंदर्य निखर आया है। कुछ दादरे विलंबित लय में भी गाए जाते हैं जैसे -

'भीगी जाऊँ मैं पिया बचाए लई हो, झरन लागी बदरिया'

इस दादरे में बोलों की इत्मीनान से बढ़त की जा सकती है।

चूंकि ठुमरी नृत्य के साथ सम्बद्ध थी, इसलिए उसमें तबले के साथ लग्गी का महत्त्व था। स्वतन्त्र रूप से एक गायन शैली में स्थापित होने के पश्चात् भी ठुमरी ने लग्गी का साथ नहीं छोड़ा। ठुमरी में लग्गी का प्रयोग प्रभावोत्पादकता हेतु किया जाता है। गतिमान लय का आनन्द सौंदर्यवर्धन में सहायक सिद्ध होता है।

रस-भाव सौंदर्य

संगीत में रस-भाव का विशेष महत्त्व है। रस के प्रणेता नाट्य शास्त्र के रचयिता भरतमुनि माने जाते हैं। किसी भी प्रकार के संगीत को सुनकर श्रोता के मन में जो पहली तरंग उठती है उसे 'भाव' कहा जा सकता है। ठुमरी और उसकी समवर्गीय गायन शैलियों में प्रमुखतः श्रृंगार-रस की प्रधानता रहती

है। कजरी गीत-विधा का गायन वर्षा ऋतु में किया जाता है जो सरस, सुहावनी और आनंददायी ऋतु है। कजरी गीतों की रचनाओं में श्रृंगार रस का बाहुल्य मिलता है। उदाहरणार्थ -

'घेरि घेरि आई सावन की बदरिया ना

कारी घटा उठे घोर, बदरा बरसे चहूँ ओर

मोरिला बोलेला हो हमरी अटरिया ना'

इसी प्रकार चैती की एक श्रृंगार-प्रधान रचना है -

'सब बन अमुवा बउरन हो रामा

सैंया घर नाहीं

कौने मासे अमुवा बउरन लागे

कौने मासे लगल टिकोरवा हो रामा'

श्रृंगार-रस के अतिरिक्त करूण, भक्ति, शांत, वैराग्य आदि रसों की रचनाऐं भी उपशास्त्रीय संगीत में मिलती हैं। उदाहरणस्वरूप एक निर्गुण चैती है जिस पर कबीर की वाणी का प्रभाव दिखाई पड़ता है।

'परि गईल नैहरवा में दाग़ धुमिल भई ली चुनरिया

चढ़ के माया की अटरिया, सोऊँ सुख की सेजरिया

गईली परम निंदिरिया से जाग'

अवध के नवाब वाजिद अली शाह 'अख़्तर पिया' के नाम से रचना किया करते थे। 'बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाए' उनकी एक विशिष्ट रचना है। राग भैरवी की इस ठुमरी का स्थायी, अंतरा निम्न प्रकार से है।

स्थायी -

बाबुल मोरा नैहर छूटो ही जाए

अंतरा -

अंगना तो पर्वत भयो, देहरी भई बिदेस

ले बाबुल घर आपनो, मैं चली पिया के देस

चार कहार मिल मोरी डोलिया उठावे

अपना बेगाना छूटो ही जाए

भाव की दृष्टि से देखें तो ये बंदिश द्विअर्थक है। सामान्य अर्थ यह है कि विवाह उपरांत बेटी विदा होकर ससुराल जा रही है। चार कहार उसकी डोली उठा कर ले जा रहे हैं। ठुमरी का दूसरा अंर्तनिहित भाव दार्शनिक है जिसका अर्थ यह निकलता है कि मनुष्य मृत्यु के पश्चात् देह त्याग कर इस संसार से विदा ले रहा है। रस की दृष्टि से यह ठुमरी वियोग श्रृंगार की है। बरसों पुरानी होते हुए भी यह ठुमरी आज भी नवीनता लिए है और सर्वाधिक प्रचलित है। विभिन्न कलाकारों द्वारा इसकी भावपूर्ण अदायगी ने लोगों के मन पर अमिट छाप छोड़ी है। शास्त्रीय संगीत से लेकर फ़िल्म संगीत तक इस ठुमरी को अपनाया गया है।

साहित्यिक सौंदर्य

किसी भी काव्य में भाषा और विषय ये दो तत्त्व प्रमुख रूप से से विद्यमान रहते हैं।[ix] ठुमरी और उसकी समवर्गीय गायन शैलियों की भाषा ब्रज, अवधी, पुरबी और भोजपुरी है। रचनाओं में कहीं-कहीं खड़ी बोली और उर्दू का प्रभाव भी परिलक्षित होता है। कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं -

चैती (भोजपुरी भाषा)

पियरी न पहिरब गोरिया, मोरे रामा आयल चैत का महीनवा

होरी (ब्रज भाषा)

आज बिरज में होरी रे रसिया

होरी रे रसिया बरजोरी रे रसिया

ठुमरी (अवधी भाषा)

बारे बलम फुलगेंदवा न मारो

लगत करेजवा में चोट

दादरा (बनारसी भाषा)

सांवरिया प्यारा री मोरी गुइयाँ

वो तो बांधे ढाल तलवरिया

जुलुम कर डारा री मोरी गुइयाँ

ठुमरी-दादरा आदि गीत विधाओं के साहित्य में राधा-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन, नायक-नायिका के बिछोह, प्रणय व मिलन आदि का वर्णन मिलता है। मध्ययुग के विलासपूर्ण वातावरण में विकसित होने के कारण इन रचनाओं को रीति काव्य के नायिका भेदों ने प्रभावित किया। राग पीलू की प्रसिद्ध ठुमरी 'नदिया किनारे मोरा गाँव, तुम अइयो घनश्याम', अभिसारिका नायिका का उदाहरण है। इसी प्रकार से राग बिहाग की ठुमरी - 'बलम तेरे झगरे में रैन गई' में कलहांतरिता नायिका के दर्शन होते हैं। कुछ कलाकारों ने संत कवियों के पदों को भी ठुमरी के रूप में प्रस्तुत किया है। जैसे सूरदास जी का पद है -

'मुरलिया कौन गुमान भरी

सोने की नाहीं, रूपे की नाहीं

नाहीं रतन जड़ी'

मिश्र तिलककामोद में इस ठुमरी को सिद्धेश्वरी देवी जी ने बखूबी गाया है। साहित्यिक सौंदर्य से युक्त उपशास्त्रीय संगीत की अनेक बंदिशें उपलब्ध हैं। जैसे दादरा की ये बंदिश -

'खेलि रहे रंग होरी, उनके दोऊ नैना

श्याम पूतरी श्याम भई है

ज्योत भई राधे गोरी

तेल फुलेल सहज चिकनाई

अंजन करत अजोरी'

इस रचना में राधा-कृष्ण द्वारा नैनों से होरी खेलने का वर्णन है।

अलंकरण का सौंदर्य

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

ठुमरी, दादरा, कजरी, चैती व होरी गीत-विधाओं के प्रस्तुतिकरण को विभिन्न अलंकरणों से सजाया जाता है। खटका, मुर्की, ज़मज़मा, मीड़ आदि गमकों का प्रयोग लोच-लचक हूक-पुकार, काकु-भेद, टप्पे-अंग की छोटी-छोटी तानें, बोलतानें आदि। इन विधाओं को गाते समय हाँ, अरे, ए आदि स्तेभाक्षरों का प्रयोग मिलता है। चैती गायन में अरे रामा या हो रामा की टेक का प्रयोग किया जाता है। दादरा आदि गीतों में प्रभावोत्पादकता उत्पन्न करने के लिए कभी-कभी कलाकार उपयुक्त शेर, दोहे, सवैये इत्यादि का प्रयोग भी करते हैं। उदाहरणार्थ बेग़म अख़्तर ने अपने द्वारा गाए निम्नलिखित दादरे में बीच में शेर का प्रयोग किया है -

'हमरी अटरिया पे आवो रे सांवरिया

देखा देखी तनिक होई जाए'

शेर -

'तस्व्वुर में चले आते हो, कुछ बातें भी होती हैं

शबे फुरक़त भी होती है, मुलाकातें भी होती हैं'[ix]

गायन का सौंदर्य आवाज़ और गले की हरकत पर निर्भर करता है। प्रस्तुतीकरण के समय उपरोक्त अलंकरणों का प्रयोग गायन में निखार पैदा करता है।

निष्कर्ष

संगीत-कला मानव-संस्कृति की देन है। मनुष्य में रचनात्मक प्रवृत्ति स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहती है। संगीत की अभिव्यक्ति मनुष्य की इसी रचनात्मक प्रवृत्ति का फल है। संगीत केवल स्वरों से नहीं बनता अपितु उसमें अन्य तत्त्वों की आवश्यकता होती है जैसे लय, बंदिश, साहित्य, राग, ताल, रस, भाव, अलंकरण इत्यादि। इन सबके समन्वय से ही किसी भी संगीत विधा में सौंदर्य-बोध होता है। ठुमरी और उसकी समवर्गीय गायन शैलियाँ भी इन्हीं सौंदर्य तत्त्वों से खिलती हैं और कलाकार व श्रोता को आनंद देती हैं। अंततः मैं यही कहना चाहूँगी कि किसी भी गायन विधा में जो संभावनाएँ हैं, जब हम उन्हें समझ कर, मनन कर उस विधा के रस व सौंदर्य-तत्त्वों को कायम रखते हुए प्रस्तुत करते हैं तो हम कर उस विधा के साथ न्याय कर पाते हैं। तभी कलाकार और श्रोता समरस होकर आनंद की प्राप्ति कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

i बालकृष्ण गर्ग, संगीत में सौन्दर्य-बोध, निबन्ध संगीत (संकलक - लक्ष्मी नारायण गर्ग) संगीत कार्यालय, हाथरस (मई 1978) पृ. 223

ii ठुमरी का अमूर्त भाव की दिशा में प्रगमन डॉ. श्रीरंग संगोराम, मुक्त संगीत संवाद, गानवर्धन संस्था, पुणे (जनवरी 1995) पृ. 163

iii स्रोत - ठुमरी गायिका विदुषी सविता देवी से प्राप्त बंदिश

iv स्रोत - ठुमरी गायिका विदुषी सविता देवी से प्राप्त बंदिश

v Source - Classical Songs of Savita Devi, 2020 Saregama India Ltd. (20/3/1985) www.youtube.com/channel/UCplwwTJ-17BxrqEPTAWDlOQ

vi Source - Live Concert, Thumri Festival, New Delhi (7-9 Aug 2015) #vibhuti_productions #thumri_raag_bihag #vidushi_girija_devi #humse_najariya_kahe_pheri #banars _gharana_vocalist #girija_devi_live_concert #thumri_festival

vii डॉ. शान्ति जैन, चैती (तृतीय संस्करण 2012) विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ. 49

viii support.google.com/youtube?p=sub_to_oac

ix डॉ. शत्रुहन शुक्ल, ठुमरी की उत्पत्ति, विकास और शैलियाँ (1983), हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, पृ. 201, 202

x sarega.ma/classical_yt